अतिरिक्त भाग

अध्ययन 1

भाषणों के तीसरे ''अधूरे'' दौर की समस्या

समस्या

भाषणों के तीसरे, ''अधूरे'' दौर की समस्या तीन भागों के इर्द-गिर्द घूमती है। पहला अय्यूब की पुस्तक के मेसोरी टैक्सट में भाषणों के तीसरे और अंतिम दौर में सोपर नहीं बोलता है (22:1-27:23)। दूसरा, बिलदद का तीसरा भाषण संक्षिप्त है, जो केवल छह आयतों में है (25:1-6)। तीसरा, 26:1-27:23 में अय्यूब का उत्तर, 28:1-31:40 में उसके अंतिम भाषणों से पहले आता है, अय्यूब की एक असामान्य चर्चा है जो छह अध्यायों में मिलती है। यह अध्याय गहन समीक्षा तथा बहुत विचार किए जाने वाली है।

1780 में बी. कैनिकॉट ने सुझाव दिया कि अय्यूब 27:13-23 वाला सोपर का खोया हुआ भाषण हो सकता है।[1] कुछ विद्वानों ने अय्यूब के भाषण के कई भागों को सोपर के नाम बताते हुए उसी के ठहराए नमूने का पालन किया है।[2] इसके अलावा औरों ने सुझाव दिया है कि बिलदद का अंतिम भाषण (25:1-6) लम्बा होना चाहिए।[3] समस्या के प्रस्तावित समाधान लगभग उतने ही जितने इस सामग्री का अध्ययन करने वाले विद्वान।

तर्कों का मूल्यांकन

भाषणों के तीसरे दौर को पूरा करने से इन अध्यायों को माने जाने के फिर से बंटवारे का पक्ष लेने वालों ने अपनी स्थिति के समर्थन में इस तर्क के तीन बुनियादी विचार दिए हैं।

पहला, उन्होंने माना कि बिलदद का तीसरा भाषण असामान्य रूप से छोटा है और कुछ हद तक उसकी पिछली बातों से अलग है। परन्तु ध्यान दिलाया गया है कि भाषणों के थोड़ा थोड़ा करके कम होने की बात लेखक का सामान्य पैटर्न हो सकता है।[4] उसका कहने का अर्थ यह हो सकता है कि अय्यूब के मित्र अपनी सब दलीलें दे चुके थे। एलीहू के भाषण के आरम्भिक पद्य इस विचार का समर्थन करते हैं। एलीहू की परेशानी का सबब मित्रों द्वारा अय्यूब को उत्तर देने में उनकी अक्षमता था (32:3, 5, 12)। इसके अलावा बिलदद के तीसरे भाषण में बदलाव उनके बीच बढ़ने वाले तनाव के कारण हो सकता है।

दूसरा, कइयों ने तर्क दिया है कि सोपर का तीसरा भाषण तीसरे दौर को पूरा करने और उसे संतुलित करने के लिए आवश्यक है। इससे बढ़कर ए. एस. पीक ने दावा किया कि सोपर कोई चुप रहने वाला व्यक्ति नहीं था।[5] परन्तु ऊपर बताए गए उत्तर ही यहां पर लागू होंगे यदि सचमुच में लेखक का उद्देश्य यह दिखाना था कि मित्रों के पास कहने को और कुछ नहीं था।

वचन के फिर से बटवारे की स्पष्ट कठिनाइयां ऐसा करने की इच्छा रखने वालों के बीच

विचारों की भिन्नता से साफ़ दिखाई देती है। सॉलोमन बी. फ्रीहोफ ने साफ लिखा है:

> बहुत से मामलों में दौर के मूल क्रम को बहाल करना बड़ा मुश्किल होता है। बहुत से विद्वानों ने ऐसा करने का प्रयास किया है। वे इस या उस अध्याय से आयतें या आयतों के भाग चुनकर उन्हें अय्यूब या सोपर आदि के सचमुच के भाषण बनाने के लिए नये सिरे से बनाते हैं। *यह तथ्य कि लगभग हर विद्वान का अपना ही बनाया है, संकेत देता है कि किसी की भी बनावट केवल बनाने वाले को छोड़ किसी दूसरे के मानने में नहीं आती।* निश्चय ही हमारी ओर से किया गया कोई भी प्रयास पाठक के लिए उलझाने वाला होगा। इसके अलावा इसका केवल सैद्धांतिक मोल होना था।[6]

कइयों ने दावा किया है कि अय्यूब के माने जाने वाले अध्यायों में कुछ ऐसी बातें हैं जो ''अय्यूब के मुंह से निकलनी अनुपयुक्त'' लगती हैं।[7] मेरे विचार से यह सबसे अधिक प्रभावशाली तर्क है। यह बात विशेषकर अय्यूब 27:13–23 पर लागू हुई लगती है। उत्तर में, लगभग एक सदी पहले कार्ल बुडे ने सुझाव दिया कि अय्यूब अपने मित्रों के तर्कों को उन्हीं के विरुद्ध इस्तेमाल कर रहा था।[8] गलेशन एल. आरचर जूनियर ने इस विषय पर एक टिप्पणी दी:

> एलीपज, बिलदद, सोपर बार बार दुष्टों को मिलने वाले निश्चय दण्ड पर उपदेश दे रहे हैं और अय्यूब से किसी गुप्त पाप को मान लेने का आग्रह कर रहे हैं। परन्तु दूसरी ओर यह समझ आना चाहिए कि अय्यूब कहीं पर पापी के लिए किसी बचाव के लिए नहीं कहता या अपने लिए कोई ऐसी आशा नहीं करता कि अंत में वह परमेश्वर के न्याय से बच निकलेगा। वास्तव में अध्याय 27 में वह जो काम करता है वह कुशलतापूर्वक अपने अनुचित आरोप लगाने वालों पर पासा पलट देता है जो दृढ़तापूर्वक यह कह रहे थे कि उसका दु:ख गुप्त और स्वीकार न किए गए पाप का परिणाम था। फिर धार्मिकता, शालीनता और न्याय के लिए अपनी ही बिना शर्त निष्ठा पर ज़ोर देते हुए अय्यूब ने बड़े तर्कसंगत ढंग से अपनी उम्मीद को ब्यान करने के लिए कि उसके झूठे आरोपी स्वयं के बदनाम करने वालों को अपने न्याय का फल चखेंगे। आगे बढ़ जाता है।[9]

सारांश

संक्षेप में मेरा विचार यह है कि समस्याएं तो रहती हैं, पर व्यक्ति अय्यूब वाले वचन की खराई को चुनना पसंद कर सकता है। इसके विरोध में दिए गए तर्क अधूरे साबित हुए हैं। अय्यूब के अंतिम भाषणों को विभाजित करने का तर्क देने वाले विद्वान भी इस बात पर एक मत नहीं है कि किन भागों का फिर से बटवारा किया जाना चाहिए। आज कई विद्वान अय्यूब की पुस्तक के साकल्यवादी विचार को चुनना पसंद करते हैं।

टिप्पणियां

[1]देखें आर. के. हेरिसन, *इंट्रोडक्शन टू द ओल्ड टैस्टामैंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1969), 1033. [2]इस पर सर्वसम्मति नहीं पाई जाती कि कौन सी आयतें सोपर वाली होनी चाहिए।

जॉर्ज बुचनन ग्रे ने अय्यूब 27:7–10, 13–23 को सोपर को दिए जाने के ए. एस. पीक के प्रस्ताव को माना। (जॉर्ज बुचनन ग्रे, *ए क्रिटिकल इंट्रोडक्शन टू द ओल्ड टैस्टामैंट* [लंदन: डकवर्थ, 1913], 122.) रॉबर्ट फ़ेफर ने सोपर के भाषण को इस प्रकार से पुन: रचना की: अय्यूब 27:13; 24:21–24, 18–20; 27:14, 15. (रॉबर्ट फ़ेफर, *इंट्रोडक्शन टू द ओल्ड टैस्टामैंट,* 2रा संस्क. [न्यू यॉर्क: हार्पर ऐंड ब्रदर्स पब्लिशर्स, 1941], 664.) रॉबर्ट गोर्डिस यह मानते हुए कि वचन की हर प्रस्तावित बहाली आवश्यक रूप में सम्भावित और अनिश्चित है, पर फिर भी रॉबर्ट गोर्डिस ने अय्यूब 27:13 को सोपर का ही माना। (रॉबर्ट गोर्डिस, *द बुक ऑफ़ गॉड ऐंड मैन: ए स्टडी ऑफ़ अय्यूब* [शिकागो: द यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1965], 277.) कई विद्वानों के विचारों को उद्धृत करने के बाद एच. एच. रोअले ने अय्यूब 27:7–12; 24:18–24; 27:13–23 को सोपर का बताया। (एच. एच. रोअले, *अय्यूब,* द सेंचुरी बाइबल, न्यू सीरीज़ [ग्रीनवुड, साउथ कैरोलाइना: द अटिक प्रैस, Inc., 1970], 221–22.) [3]टी. एच. रोबिन्सन ने अय्यूब 26:2–14 को बिलदद के तीसरे भाषण का भाग माना। (टी. एच. रोबिन्सन, *अय्यूब ऐंड हिज फ्रेंड्स* [लंदन: एससीएम प्रैस लिमिटेड, 1955], 76–77.) रॉबर्ट गोर्डिस ऐंड मेरविन एच. पोप ने अय्यूब 26:5–14 को बिलदद का माना। (गोर्डिस, 274; मेरविन एच. पोप, *अय्यूब,* द एंकर बाइबल, अंक 15 [गार्डन सिटी, न्यू यॉर्क: डबलडे ऐंड कंपनी, Inc., 1965], 163.) [4]हैरिसन, 1033; देखें क्लाइड टी. फ्रांसिस्को, ''ए टीचिंग आउटलाइन ऑफ़ द बुक अय्यूब,'' *रिव्यू ऐंड एक्सपोज़र* 68 (1971): 516. [5]ए. एस. पीक, *अय्यूब,* द सेंचुरी बाइबल (न्यू यॉर्क: थॉमस नेल्सन ऐंड संस, लिमि., 1904), 231. [6]सॉलोमन बी. फ्रीहोफ़, *बुक ऑफ़ अय्यूब,* द ज्यूइस कॉमैंट्री फॉर बाइबल रीडर्स (न्यू यॉर्क: यूनियन ऑफ़ अमेरिकन हिब्रू कॉन्ग्रिशन्स, 1958), 163 (महत्व जोड़ें)। [7]रोअले, 221. [8]ए. बी. डेविडसन और एच. सी. ओ. लैंचेस्टर, द *बुफ ऑफ़ अय्यूब विद नोट्स, इंट्रोडक्शन ऐंड अपैंडिक्स,* कैम्ब्रिज बाइबल फॉर स्कूल्स ऐंड कॉलेजस (कैम्ब्रिज: यूनिवर्सिटी प्रैस, 1918), xliii में उद्धृत। [9]ग्लेसन एल. आर्चर, जूनियर, *ए सर्वे ऑफ़ ओल्ड टैस्टामैंट इंट्रोडक्शन,* संशो. व विस्तार (शिकागो: मूडी प्रैस, 2007), 434.

अध्ययन 2

एलीहू के भाषणों की ऐतिहासिक आलोचना[1]

उन्नीसवीं सदी में बाइबल की आलोचना आरम्भ होने से पहले तक एलीहू के भाषणों को आम तौर पर अय्यूब की पुस्तक का प्रामाणिक और अनिवार्य भाग माना जाता था।[2] जे. जी. इछोर्न और एम. एच. स्टलहमन 1803-1804 तक उनकी यथार्थता पर सवाल उठाने वाले पहले लोगों में से लगते हैं।[3] उन्नीसवीं तथा बीसवीं दोनों सदियों में कई विद्वानों ने उन्हीं की बात को आगे बढ़ाया है।[4]

परन्तु यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि आधुनिक विद्वता किसी भी प्रकार से एलीहू के भाषणों को वचन में कम महत्व वाली कहकर नकारने में एकमत नहीं है। कार्ल बुडे ने उनकी प्रामाणिकता की पुरजोर वकालत की।[5] कई आधुनिक विद्वान एलीहू के भाषणों की प्रामाणिकता की दलील भी देते हैं।[6] कुछ लोग उन्हें बाद के किसी समय में स्वयं लेखकों द्वारा जोड़ दिया गया मानते हैं।[7]

एलीहू के भाषणों की प्रामाणिकता के विरुद्ध तर्क

एलीहू के भाषणों को अय्यूब की पुस्तक में बाद में जोड़े गए मानने के कई तर्क दिए गए हैं। एस. आर. ड्राइवर ने इनमें से चार कारण दिए हैं जो आलोचकों तथा टीकाकारों के सामान्य विचार संक्षिप्त करते हैं जिनसे वह सहमत था: (1) न तो प्रस्तावना और न उपसंहार में एलीहू का उल्लेख नहीं है। (2) एलीहू के भाषण केवल कविता के साथ जुड़े हुए हैं जिन्हें निकाल देने से कहानी में कोई बड़ा फर्क नहीं आएगा। उन्हें निष्कर्ष में दखल देने वाले और व्यवधान उत्पन्न करने वाले माना जाता है। (3) एलीहू ने वास्तव में तीनों मित्रों, खासकर एलीपज द्वारा कही गई बातों में कुछ नया नहीं कहा था। यह स्पष्ट है कि उसने कविता में पहले बताई गई समस्याओं का कोई नया समाधान नहीं निकाला। (4) इन भाषणों तथा बाकी की कविता में शैली की कई कविताएं स्पष्ट दिखाई देती हैं।[8]

ड्राइवर का निष्कर्ष है कि एलीहू के भाषण "बाद के किसी लेखक के द्वारा, कुछ अतिरिक्त बातें जोड़ने के लिए जिनमें उसे इसमें कमी लगी, मूल कविता में जोड़े गए हैं।"[9]

एलीहू के भाषणों की प्रामाणिकता के विरुद्ध दिए गए तर्कों का विश्लेषण

जहां तक एलीहू के भाषणों की प्रामाणिकता के विरुद्ध अलग-अलग तर्कों के वजन का स्वाल है इस पर कोई विविधतापूर्वक एकमत नहीं है। इस तथ्य से हमें समस्या के आने के प्रति चौकस हो जाना चाहिए। फ्रांसिस आई. एंडर्सन ने लिखा है कि "यह आश्चर्यजनक है कि इन

तर्कों के अपने निर्धारण पर विद्वान कैसे बंटे हुए हैं।''[10]

''एलीहू का उल्लेख न तो भूमिका में है और न उपसंहार में।'' एलीहू का नाम उन अध्यायों के बाहर नहीं है जिनमें उसके भाषण मिलते हैं। नॉरमन एच. स्नेथ ने इस तर्क को मानते हुए सुझाव दिया कि एलीहू के भाषण उपसंहार के बाद किसी समय स्वयं लेखक के द्वारा जोड़ दिए गए।[11]

इसको हैरानीजनक नहीं माना जाना चाहिए कि भूमिका में एलीहू का उल्लेख नहीं है। संदर्भ उसे कार्यवाहियों को देखने वाले दर्शक के रूप में दिखाता है जो सब कुछ बड़ी दिलचस्पी से सुन रहा था और अब उससे रहा नहीं गया और वह बोलने लगा (32:1-22)। शायद इस तथ्य को अधिक वज़न दिया जाना चाहिए कि न ''जो सही है, वह न बोलने के लिए'' तीनों मित्रों के साथ उपसंहार में उसे गलत नहीं कहा गया (42:7)। सेमुएल कॉक्स ने यह कारण देते हुए कि एलीहू केवल उन्हीं अध्यायों में क्यों है जिनमें उसके भाषण हैं एक दिलचस्प सुझाव दिया। उसने कहा कि वाद विवाद पर एलीहू मानवीय निर्णय देता है। एलीहू श्रोताओं को दर्शाता है। दिलचस्पी रखने वाले भीतरी दर्शकों को जिनकी चर्चा किए जा रहे विषय पर काफी है। इसलिए एलीहू के उपदेश स्वाभाविक रूप में ईश्वरीय निर्णय के बाद आते है।[12]

''भाषण केवल कविता से जुड़े हैं और वास्तव में परेशान करने वाले हैं।'' ऐसा मानने वालों का तर्क है कि अय्यूब की अंतिम चुनौती के तुरंत बाद यहोवा के उपदेशों की उम्मीद होगी (31:40)। स्नेथ ने सुझाव दिया कि एलीहू के भाषण अपने समय की कट्टरता पर आक्रमण के रूप में लिखे गए थे और यह बात वास्तव में कविता में नई है क्योंकि अय्यूब और उसके मित्र दोनों ही रूढ़ीवादी विचारों को दर्शाते हैं।[13] यह भी सुझाव दिया गया है कि यहोवा के उपदेशों के पहले एलीहू के भाषणों का होना या तो परमेश्वर के विरुद्ध लगाए गए अय्यूब के आरोपों को नरम करने या परमेश्वर का सामना करने के लिए तैयार कर रहे थे।[14]

''भाषणों में कोई नई बात नहीं है जो पहले न कही गई हो।'' यह तर्क आत्मघाती प्रतीत होता है। यदि इन भाषणों में कोई नई बात नहीं है तो फिर इन्हें जोड़ा क्यों गया? इन्हें उनके द्वारा जिनके पास इनके जोड़े जाने से पहले दस्तावेज था स्वीकार क्यों किया गया?[15] स्नेथ ने ध्यान दिलाया कि एलीहू के भाषणों की एक नई बात एक जवान द्वारा पुराने रूढ़ीवाद की आलोचना है।[16]

''एलीहू के भाषणों तथा शेष कविता के बीच शैली तथा भाषा के अंतर हैं।'' शैली तथा भाषा की भिन्नताओं के आधार पर एलीहू के भाषणों को निकालने का तर्क देने वालों को दो प्रसिद्ध विद्वानों की चेतावनियों पर ध्यान देना चाहिए। रॉबर्ट गोर्डिस ने चेतावनी दी कि ''जहां तक शैली के गुण की जांच की बात है, यह खुले तौर पर व्यक्तिनिष्ठ है,''[17] और एडोर्ड ढोर्म का अवलोकन है, ''आवश्यक है कि शैली के तर्क को बड़ी सावधानी से लिया जाए।''[18]

स्नेथ ने इन भाषणों तथा अय्यूब की शेष पुस्तक के बीच शैली की भिन्नताओं का सावधानीपूर्वक विश्लेषण किया। उसने अपनी खोज को शैली के तीन पहलुओं में बांटा: (1) पूर्वसर्गों का इस्तेमाल, (2) ईश्वरीय नामों का इस्तेमाल, (3) उत्तम पुरुष एकवचन सर्वनामों का इस्तेमाल, (4) कथित अरामीवाद, और (5) अनूठे शब्दों का इस्तेमाल। उसने इब्रानी कविता की विशेषताओं की ओर ध्यान दिलाया जिसमें लेख में शैली की कई भिन्नताओं के कारण के रूप में दोनों के पहले और दूसरे भाग में भिन्नता होनी आवश्यक है।[19]

पूर्वसर्ग के प्राचीन रूपों के इस्तेमाल करने की प्रवृति केवल एलीहू के भाषणों में ही नहीं बल्कि पूरी पुस्तक में पाई जाती है। इसे पुस्तक का विशेष गुण माना जा सकता है।[20] स्नेथ ने अपने अध्ययन को यह कहते हुए समाप्त किया, "इस प्रकार से हमें एलीहू के भाषणों तथा पुस्तक के कविता वाले शेष भागों की शैली में ऐसी समानताएं मिलती हैं जिनसे हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि सभी भाग एक ही लेख के कारण हैं।"[21] दो प्रसिद्ध इब्रानी भाषाविदों ने शैली के विचारों के आधार पर एलीहू के भाषणों को कविता की शेष सामग्री को लेखक का ही माना है।[22]

एलीहू के भाषणों की प्रामाणिकता के विरुद्ध भाषा सम्बन्धी तर्क मुख्यतया आरामी प्रभाव तथा कुछ इब्रानी शब्दों के आधार पर है जिन्हें बाद में डाले गए माना जाता है। स्नेथ ने अय्यूब की पुस्तक के कथित अरामीवाद का अध्ययन किया। ब्यालीस आधारों में से जो उन्होंने बताए, स्नेथ को पच्चीस आधार बिल्कुल अच्छे इब्रानी आधार वाले लगे, उनमें से पांच सामी आधार वाले, और आठ के आधार पर संदेह था। इसका अर्थ यह हुआ कि पक्के तौर पर केवल चार अरामी रह गए और यह चारों शब्द लेखक के सम्बन्ध में कोई निर्णायक संदेश नहीं दे पाए।[23] उसने निष्कर्ष निकाला:

> हमें ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता है कि अय्यूब की पुस्तक का कथित अरामीवाद पुस्तक के अलग-अलग भागों के लेखकों में कोई भिन्नता का संकेत देता हो। वास्तव में इसमें हमें कहीं आरामीवाद नहीं मिलता। वे जिन्हें अरामीवाद कहा जा सकता है उनमें किसी तिथि का कोई संकेत नहीं है, क्योंकि कहीं कहीं स्पष्ट अरामीवद वास्तव में सब इब्रानी भाषा के स्तर के ही हैं। यहां पर ब्यालीस पुस्तकों के अध्ययन की बात से पता चलता है कि हमारी उम्मीद के मुताबिक, अय्यूब की पुस्तक के लेखक का शब्द भण्डार काफ़ी बड़ा है।[24]

वास्तव में बीसवीं सदी के आरम्भ के सालों में पुराने नियम की जैसी आलोचना हो रही थी वह व्यर्थ हुई है। विद्वानों के बीच ऐसा कोई एक मत नहीं है जो उपलब्ध प्रमाण के आधार पर हो जो लेखक के एलीहू के भाषणों को अय्यूब की पुस्तक के महत्वपूर्ण भाग के लिखा जाने के विरुद्ध है। मैं एलीहू के भाषणों को कविता का अनिवार्य भाग मानता हूं। चर्चा में उनके योगदान को टीका में लिखा गया है।

टिप्पणियां

[1]अय्यूब की पुस्तक के मुख्य भाग के रूप में एलीहू के भाषणों की प्रामाणिकता की यह चर्चा रॉबर्ट डोनल्ड शैकलफोर्ड, *द कांसेप्ट ऑफ़ नॉलेज इन द बुक ऑफ़ अय्यूब* (टी.एच.डी. डिसर्टेशन: न्यू ऑरलियन्स बैपटिस्ट थियोलॉजिकल सेमिनरी, 1976), 77-88 से ली गई है। [2]एक बड़ा अपवाद ग्रेगरी महान था (मृत्यु 604 ई.)। (रॉबर्ट गोर्डिस, *द बुक ऑफ़ गॉड ऐंड मैन: ए स्टडी ऑफ़ अय्यूब* [शिकागो: द यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1965], 106.) [3]देखें नॉर्मन एच. स्नेथ, *द बुक ऑफ़ अय्यूब: इट्स ओरिजिन ऐंड पर्पज़,* स्टडीज़ इन थियोलॉजी, 2 सीरीज़, नं. 11 (नेपरविले, इलिनोय: एलेस आर. ऐलसन, 1968), 72; और आर. के. हेरिसन, *इंट्रोडक्शन टू द ओल्ड टैस्टामैंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1969), 1034. [4]हैरिसन, 1034-35; स्नेथ, 72; और एच. एच. रोअले, *फ्रॉम मोज़स टू कुमरान: स्टडीज़ इन द ओल्ड टैस्टामैंट* (लंदन: लटरवर्थ प्रैस, 1963), 147-50. [5]एडोर्ड ढोर्म ने कारल बुडे के तर्कों का एक उपयोगी विश्लेषण दिया: देखें एडोर्ड ढोर्म, *ए*

कॉमैंट्री ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब, अनु. हेरल्ड नाइट (लंदन: थॉमस नेल्सन ऐंड संस, 1967), cvii–cix. [6]ग्लेसन एल. आर्चर, जूनियर, *ए सर्वे ऑफ़ ओल्ड टैस्टामैंट इंट्रोडक्शन,* संशो. व विस्तार (शिकागो: मूडी प्रैस, 2007), 435; क्लाइड टी. फ्रांसिस्को, इंट्रोड्यूसिंग द ओल्ड टैस्टामैंट (नैशविल: ब्रॉडमैन प्रैस, 1950), 197; फ्रांसिस आई. एंडरसन, *अय्यूब, ऐन इंट्रोडक्शन ऐंड कॉमैंट्री,* टिंडेल ओल्ड टैस्टामैंट कॉमैंट्रीस (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1974), 49–52; रोअले, 149, एन. 1; नॉर्मन एल. गिस्लर, *ए पापुलर सर्वे ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक्स, 2003), 189–90; और पीटर सी. क्रेगी, *द ओल्ड टैस्टामैंट: इट्स बैग्राउंड, ग्रोथ, ऐंड कोंटेंट* (नैशविल: एबिंगडन प्रैस, 1986), 226–27. [7]रॉबर्ट गोर्डिस, *पोयट्स, प्रोफेट्स ऐंड सेजस: इसायस इन बिब्लिकल इंटरप्रिटेशन* (ब्लूमिंग्टन, इंडस्ट्रीज़: यूनिवर्सिटी प्रैस, 1971), 292; और स्नेथ, 73. [8]एस. आर. ड्राइवर, *ऐन इंट्रोडक्शन टू द लिटरेचर ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट* (क्लीवलैंड, ओहायो: वर्ल्ड पब्लिशिंग कं., 1956), 428–29. [9]वहीं, 429. [10]एंडरसन, 50.

[11]स्नेथ, 74. अन्य विद्वानों ने भी यह विचार लिया है, जिनमें शामिल हैं: गोर्डिस, *द बुक ऑफ़ गॉड ऐंड मैन,* 110; और जोहान्स पेडर्सन, *इज़राइल: इट्स लाइफ़ ऐंड कल्चर I-II,* अनु. असलॉग मोलर (लंदन: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, 1926), 531. [12]सेमुएल कॉक्स, *ए कॉमैंट्री ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब,* 2रा संस्क. (लंदन: केगन पॉल, ट्रेंच ऐंड कंपनी, 1885), 413. [13]स्नेथ, 74. [14]टी. माइल्स बेनेट, *व्हेन ह्यूमन विज़्डम फेल्स: ऐन एक्सपोज़िशन ऑफ़ द बुक ऑफ़ अय्यूब* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1971), 78. [15]गोर्डिस, *पोयट्स, प्रोफेट्स ऐंड सेजस,* 293. [16]स्नेथ, 85. [17]गोर्डिस, *पोयट्स, प्रोफेट्स ऐंड सेजस,* 108. [18]ढोर्म, ciii. [19]स्नेथ, 76, 78. [20]वहीं, 76.

[21]वहीं, 85. [22]डेविड नोएल फ्रीडमैन ने लेखक के एक होने का तर्क दिया परन्तु उसने यह दिखाने का प्रयास किया कि लेखक ने अय्यूब की पुस्तक को फिर से संगठित करने की सामान्य योजना के रूप में चार भाषण लिखे और उनमें से प्रत्येक को बातचीत के बीच में नया मोड़ आने पर डाल दियो। (डेविड नोएल फ्रीडमैन, ''द एलीहू स्पीच इन द बुक ऑफ़ अय्यूब,'' *हार्वर्ड थियोलॉजिकल रिव्यू* 61 [1968]: 51–59.) विलियम फॉक्सवेल अलब्राइट ने कहा कि उसका विश्वास कि एलीहू के भाषण 1965 में प्रोफेसर फ्रीडमैन को लिखे गए पत्र के मूल लेखक के ही थे। (डी. एन. फ्रीडमैन, ''ऑर्थोग्राफिक पेक्यूलियार्टीस इन द बुक ऑफ़ अय्यूब,'' *इरेट्ज़-इज़राइल: आरक्योलॉजिकल, हिस्टॉरिकल ऐंड ज्योग्राफिकल स्टडीस,* सम्पा. ए. मलमात [जेरूसलेम: इज़राइल एक सपोलोरिसन सोसाइटी, 1969], 9:44.) में उद्धृत किया गया। [23]स्नेथ, 104–12. [24]वहीं, 83.

अध्ययन 3

यहोवा के उपदेशों की ऐतिहासिक आलोचना[1]

यहोवा के पहले उपदेश की प्रामाणिकता

यहोवा का पहला भाषण अध्याय 38 और 39 में है। यहोवा ने आंधी के बीच में बात की, यह परमेश्वर पुराने नियम में प्रभु दर्शन की सूचना देने के लिए बार बार इस्तेमाल किया गया अलंकार। किसी व्यक्ति को प्रभु के प्रकाशन को कहा गया है (निर्गमन 19:16-19; अय्यूब 38:1; 40:6; भजन संहिता 18:7-15; यहेजकेल 1:4-28; जकर्याह 9:14)।

आलोचनावादी विद्वानों ने इस बात पर सवाल उठाया है कि यहोवा का पहला भाषण अय्यूब की पुस्तक के आरम्भ में लिखे जाने पर इसका भाग था या नहीं इस भाषण की प्रामाणिकता पर सबसे पहले सवाल 1880 के आरम्भ में एम. वरनस द्वारा ठाया गया।[2] बीसवीं सदी में, अन्य विद्वानों ने भी अंधड़ में से यहोवा के भाषणों को अप्रामाणिक माना।[3] 1928 में मिलर बर्रोस ने "आंधी के बीच में से स्वर" की यथार्थता के लिए ठोस तर्क दिया।[4] उसके बाद से ऐसे विद्वानों की संख्या बढ़ती जा रही है जो यहोवा के पहले भाषण की प्रामाणिकता को मानते हैं।[5]

प्रामाणिकता के विरुद्ध तर्क

सेमुएल टेरियन ने उन तर्कों की संक्षिप्त समीक्षा दी है जो आलोचकों द्वारा यहोवा की प्रामाणिकता के विरुद्ध उठाए गए हैं।[6] बुनियादी तौर पर तीन तर्क दिए गए हैं: (1) जो लोग यह मानते हैं कि बातचीत का उद्देश्य दु:ख की समस्या पर चर्चा करना है वे भाषणों को निरर्थक मानते हैं क्योंकि उनसे इस बातचीत के विचारों में कुछ बढ़ोतरी नहीं होती। (2) कुछ आलोचक आरोप लगाते हैं कि यह भाषण मात्र कविता में कहीं गई बातचीत का दोहराव हैं। अय्यूब तथा मित्रों ने पहले ही परमेश्वर के सर्वसामर्थी होने को माना था। इन भाषणों से इस विषय पर कोई अतिरिक्त प्रकाश नहीं पढ़ता। (3) सी. कुल के अनुसार यहोवा के भाषणों से अय्यूब को मिले परमेश्वर के ठोस दर्शन की जगह ले लेते हैं। उसने उन बातों को जो परमेश्वर ने अय्यूब से आंधी के अंधकार में से कीं उस घोषणा के विपरीत लगे जो अय्यूब ने परमेश्वर को आमने सामने देखा (42:5)।[7]

पहले भाषण की सामान्य सत्यता का मानने वालों ने शुतुरमुर्ग के साथ व्यवहार वाले भाग को नकारा है (39:13-18)। उनका तर्क है कि यह पद्य सप्तति अनुवाद में नहीं है, इसलिए यह इसमें बाद में जोड़ा गया।[8]

प्रामाणिकता के विरुद्ध तर्कों का एक विश्लेषण

यहोवा के भाषणों की प्रामाणिकता के विरुद्ध पहला तर्क यह मान लेता है कि अय्यूब की पुस्तक का उद्देश्य मनुष्य के कष्ट को समझाना है। जबकि यह स्पष्ट है कि पुस्तक के लिखे जाने

का और निर्णायक कारण था, इसलिए इस तर्क कि कोई वास्तविक मान्यता नहीं है।[9] यहोवा के साथ मनुष्य का सम्बन्ध पुस्तक के मुख्य विषयों में से एक है। मानवीय कष्ट के साथ इसी संदर्भ में निपटा जाता है। यहोवा के विषय में सीधे चाहे इस विषय पर बात नहीं की गई पर वे कवि की योजना में बड़े सुन्दर ढंग से मेल खाते हैं।

यदि ईश्वरीय हस्तक्षेप का उद्देश्य यहोवा के सर्वशक्तिमान होने की बात अय्यूब को समझाने के अलावा कोई और है, तो ऊपर दिया गया दूसरा तर्क भी मान्य नहीं है। यह स्पष्ट है कि यहोवा के भाषणों का एक बड़ा विषय परमेश्वर के साथ सामना है।[10] यह केवल सामर्थ का प्रदर्शन नहीं है। ऐसे परमेश्वर का हस्तक्षेप है जो मनुष्य जाति की चिंता करता है।

एडोर्ड ढोर्म ने एक चेतावनी में उन्हें यूनानी सप्तति अनुवाद के आधार पर अय्यूब की पुस्तक के अनुवाद को नकारते हैं। उसने अय्यूब की पुस्तक में यूनानी संस्करण का एक सचेत विश्लेषण दिया।[11] उसने तर्क दिया कि अनुवादक आराधनालय के लिए इस्तेमाल किए जाने के लिए यूनानी धर्मशास्त्र नहीं बना रहा था। इसमें की गई अधिकतर बातचीत अक्षरश: अनुवाद के बजाय सरल भाषा में की गई बाचीत है।[12] सप्तति अनुवाद में शुतुरमुर्ग के पद्य का न होना वचन के सम्बन्धित कठिनाइयों के आधार पर समझाया जा सकता है।[13] ढोर्म ने निष्कर्ष निकाला:

> ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे अनुवादक ने अपने लेख को अधिक से अधिक कांट छांट दिया हो। उसने उस पद्य को निकाल दिया जो उसे अनावश्यक लगा और उन बातों को भी जो उसे बहुत लम्बी लगीं। उसने कुछ कठिनाइयों को टाल दिया और ऐसा लगता है कि जैसे जैसे वह आगे बढ़ा उसकी थकान बढ़ती गई।[14]

प्रामाणिकता के पक्ष में तर्क

कई प्रतिष्ठित विद्वान यहोवा के पहले भाषण की प्रामाणिकता को स्वीकार करते हैं। इसकी यथार्थता के पक्ष में कई तर्क दिए गए हैं। सबसे पहले को कहा जा सकता है कि भाषण और बातचीत के बीच ठोस और शैलीगत समानताएं हैं। अय्यूब की पुस्तक की रचना पर एक अध्याय है, ढोर्म ने दोनों भागों में इस्तेमाल किए जाने वाली एक ही भाषा के कई उदाहरण दिए।[15] विशेष उदाहरण तो नहीं दिए पर टेरियन ने दावा किया कि यहोवा के भाषणों में बातचीत के बीच होने वाली भाषा की विशेषताएं और कौशल मिलता है। उसने समझाया:

> चाहे इसमें कोई शक नहीं कि वायुमण्डलीय तथा जीवविज्ञान के विषयों की विशेषता वाली शब्दावली को लिया गया है, पर कोषगत प्राथमिकताओं, आकृति विज्ञान के व्यवहार, वाक्य रचना की रचनाएं, शब्द प्रयोग पद्धति के अलंकार, छंद रूप और छंदबद्ध संरचनाओं में कोई बड़ा अंतर नहीं मिलता।[16]

आर. एम. एफ. मैकेंजी ने इसमें जोड़ा कि यदि लेखक की बात में विभाजन होता है तो ऐसे ही प्रवीण और कार्यस्तर वाले दूसरे लेखक का होना आवश्यक है। उसने व्यंग्य करते हुए टिप्पणी की, ''ऐसी क्षमता वाले कवि बहुत ही कम हैं, और हमेशा कम ही होंगे।''[17]

दूसरा, आगे की बातचीत में ईश्वरीय हस्तक्षेप की बात का अनुमान लगाया जा सकता है। अय्यूब और एलीहू दोनों ही प्रभुदर्शन चाह रहे थे (31:35–37; 37:2–13)। जेम्स मुलेनबर्ग ने

दावा किया कि यहोवा के दर्शन के बिना "पुस्तक केवल एक अधूरी रचना होती।"[18] ढोर्म को नहीं लगा कि बातचीत और प्रभुदर्शन के बीच तर्कसंगत झगड़ा सम्भव हो सकता है।[19]

तीसरी बात, ढोर्म और बॅरोज़ दोनों ने दावा किया कि यदि उपसंहार को बरकरार रखना है तो ईश्वरीय सम्बोधन एक आवश्यक परिणाम हैं।[20] जिस प्रकार से यहोवा ने एलीपज से बात की वह ईश्वरीय हस्तक्षेप और अय्यूब के पश्चात्ताप का पता देता है (42:7, 8)।

इसलिए यहोवा के पहले भाषण के विरुद्ध तर्कों तथा इसकी प्रामाणिकता के तर्कों के विश्लेषण के प्रकाशनों से इसे नकारने का कोई मान्य कारण नहीं लगता है। टेरियन के शब्द ध्यान देने योग्य हैं:

> न तो भाषा, शैली, और रूप के आधार पर, न विषय के विश्लेषण के कारण लेखक के उलट पुलट होने की अटकल लगाना सम्भव है। इसलिए योबान अपने योबानी काव्य विषय-वस्तु के प्रकाशण याहवेह के भाषणों को पढ़ना टीकापूर्ण लगता है।[21]

यहोवा के दूसरे भाषण की प्रामाणिकता

थोड़े ही विद्वान हैं जो पहले भाषण की बजाय दूसरे भाषण की प्रामाणिकता को स्वीकार करते हैं। रॉबर्ट एच. फेफर ने दूसरे भाषण की आलोचना के इतिहास की समीक्षा की। उसने दूसरे भाषण को नकारने वालों में पहले होने वालों के साथ डब्ल्यू. एम. एल. डी. वेट (1817) और जे. जी. आईशौन (1823-1824) को श्रेय दिया।[22] बीसवीं सदी में बहुत से विद्वानों ने या तो इसे नकार दिया या इसे पहले भाषण के साथ एक ही उपदेश में जोड़ना चाहा।[23]

प्रामाणिकता के विरोध में तर्क

दूसरे भाषण या कम से कम इसके भागों के आम तौर पर छूट जाने के लिए बताए जाने वाले तर्कों को जॉर्ज बुचनन ग्रे द्वारा संक्षिप्त किया गया: (1) पशुओं के दिए गए विवरण लम्बे हैं। (2) प्रश्न बहुत कम हैं और जो हैं भी उन्हें एक दूसरे के साथ मिला दिया गया है। (3) दूसरे भाषण में प्रश्नों के कम होने से यह ध्यान से निकल सकता है। (4) बात करने वाला यहोवा है, जो कि अय्यूब 41:12 में एक सीधा दावा है जो पहले भाषण में बिल्कुल नहीं मिलता। (5) पहले भाषण में जानवरों की आदतों पर ज़ोर दिया गया है जबकि दूसरे भाषण में उनके शारीरिक भागों को महत्व दिया गया लगता है। (6) जलगज और लिव्यातान फलस्तीन के वास्तविक जानवरों से बिल्कुल अलग लगते हैं जिनकी बात पहले भाषण में की गई है।[24]

टेरियन ने दूसरे भाषण को जहां निजी तौर पर सही माना वहीं उसने अतिरिक्त तर्क दिया जो इस प्रामाणिकता के विरोध करने वालों को दिया गया। "पहले भाषण के प्रश्नों के द्वारा याहवेह ने अपने उद्देश्य को पहले ही पा लिया था, जो कि विरोधी को चुप कराना था। परमेश्वर के लिए एक और चुनौती देने का अर्थ बड़ी समझ के साथ पहले ही प्राप्त कर ली गई चीज़ पर ज़ोर देना था।"[25]

प्रामाणिकता के पक्ष में तर्क

इस भाषणों की प्रामाणिकता से सम्बन्धित तर्कों के कई शानदार विश्लेषण हैं। जहां ड्राइवर

तथा ग्रे ने केवल पहले भाषण को मूल माना और दूसरे भाषण को एक सम्भावना या अतिरिक्त सम्भावना के रूप में देखा, वहीं उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि दोनों ही भाषणों में विषवस्तु तथा सामग्री की उपस्थिति की उपयुक्तता है।[26]

बॅरोज़ ने दो भाषणों की आवश्यकता के पक्ष में तर्क दिया। क्योंकि पहले भाषण के अंत में अय्यूब का अंगीकार ''न माने जाने वाला प्रण'' से बढ़कर कुछ नहीं है।[27] दूसरे भाषण के बाद अय्यूब आगे बढ़कर मनफिराव की ओर मुड़ गया।[28]

टेरियन ने दूसरे भाषण के संदर्भ को ''इसके अलंकारिक, मनौविज्ञानिक तथा धर्मशास्त्रीय चरम में ईश्वरीय हस्तक्षेप लाने वाले के रूप में देखा।''[29] उसने जलगज और लिव्यातान के स्वीकार किए जाने के तर्क का आधार यह दिया कि यहोवा ने उन्हें ''पहले भाषण के ऊपर धर्मशास्त्रीय चरमसीमा तक'' देने के लिए वैश्विक बुराई के प्रतीकों के रूप चुना था।[30]

ढोर्म बीसवीं सदी के उन प्रमुख विद्वानों में से एक है जिन्होंने दूसरे भाषण की प्रामाणिकता को स्वीकार किया। उसने बिल्कुल साफ़ ज़ोर देकर कहा, ''एक भी आयत काटी न जाए।''[31] उसने तर्क दिया कि यह केवल स्वभाविक है कि पशुओं के अपने विवरण में याहवेह को बढ़ते हुए अनुपात में आगे बढ़ना चाहिए।[32] मिस्र के रूपक की प्रसिद्ध की चिंता नहीं की जानी चाहिए क्योंकि पुस्तक के अन्य भागों में मिस्र के कई लोगों की बात है।[33] ढोर्म के अनुसार इन भाषणों तथा पुस्तक के अन्य भागों के बीच कई चौंकाने वाली समानताएं पाई जाती हैं।[34] उसने निष्कर्ष निकाला:

> हमें नहीं लगता कि इस सूची को और आगे बढ़ाने पर ज़ोर देना आवश्यक है। हमें लगता है कि उन्हें जवाब देना काफी है जो याहवेह के भाषणों में एक के बाद एक मिलने वाले विवरणों में कुछ विशेष बातों से प्रभावित हो सकते हैं। हमें कोई अधिकार नही कि किसी लेखक को विचार को जब वह अपने विषय को बदलता या अपनी शैली को बदलना चाह रहा हो, उसे इसे छोड़ देने से रोकने के लिए भाषा के छोटे दायरे में सीमित करने की कोशिश करें। सुन्दरता की शर्तों में से एक, एकता में विविधता ही रहेगी।[35]

यहोवा के किसी भी भाषण को नकारने के कोई बड़े कारण नहीं हैं। दोनों भाषणों की शैली और भाषा एक दूसरे के साथ मेल खाती है। दूसरा भाषण अय्यूब से अपनी अज्ञानता को ही नहीं बल्कि अपने सृष्टिकर्त्ता का अंगीकार करवाकर पुस्तक के विषय को पूर्ण करता है!

टिप्पणियां

[1]ये चर्चाएं मुख्यतया रॉबर्ट डोनल्ड शैकलफोर्ड, *द कांसेप्ट ऑफ़ नॉलेज इन द बुक ऑफ़ अय्यूब* (टी.एच.डी. डिसर्टेशन: न्यू ऑरलियन्स बैपटिस्ट थियोलॉजिकल सेमिनरी, 1976), 103–8, 118–22 से ली गई हैं। [2]एच. एच. रोअले, *फ्रॉम मोज़स टू कुमरान, स्टडीज़ इन द ओल्ड टैस्टामैंट* (लंदन: लटरवर्थ प्रैस, 1963), 164, एन. 2 द्वारा उद्धृत। [3]रोअले ने जे. टी. मार्शल, डब्ल्यू. ई. स्टेपल, ओ. एस. रैनकिन, और सी. कुहाल को परमेश्वर के उपदेशों के खारिज करने वालों में लिखा (वहीं)। [4]मिलर बॅरोज़, ''द वॉयस फ्रॉम द व्हर्लविंड,'' *जर्नल ऑफ़ बिब्लिकल लिटरेचर* 47 (1928): 117–32. [5]एच. एच. रोअले, *अय्यूब,* द सेंचुरी बाइबल, न्यू सीरीज़ (ग्रीनवुड, साउथ कैरोलाइना: द अटिक प्रैस, Inc., 1970), 308; *द इंटरप्रेटर'स बाइबल,* सम्पा. जॉर्ज आर्थर बट्रिक (नैशविल: एबिंगडन प्रैस, 1954), 3:891 में सेमुएल टेरियन, ''द बुक ऑफ़ *अय्यूब*: इंट्रोडक्शन ऐंड एक्सेजेसिस''; रॉबर्ट

गोर्डिस, द *बुक ऑफ़ गॉड ऐंड मैन: ए स्टडी ऑफ़ अय्यूब* (शिकागो: द यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1965), 121–22; फ्रांसिस आई. एंडरसन, *अय्यूब, ऐन इंट्रोडक्शन ऐंड कॉमेंट्री,* टिंडेल ओल्ड टैस्टामैंट कॉमैंट्रीस (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1974), 48–49, 268–72; जॉन ई. हार्टले, द *बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 30–33; और होमेर हेली, *ए कॉमैंट्री ऑन अय्यूब* (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई हाउस, Inc., 1994), 22–24. [6]सेमुएल टेरियन, ''द याहवे स्पीच ऐंड अय्यूब'स रिस्पोंसस,'' *रिव्यू ऐंड एक्सपोज़िटरी* 68 (1971): 498. [7]सी. कुल्ह, टेरियन, ''याहवेह स्पीचस,'' 498 में उद्धृत। [8]एडोर्ड ढोर्म, *ए कॉमैंट्री ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब,* अनु. हेरल्ड नाइट (लंदन: थॉमस नेल्सन ऐंड संस, 1967), xcii. [9]अय्यूब की पुस्तक को समझने की कुंजी मानवीय दु:ख की सम्पूर्ण व्याख्या में नहीं बल्कि ज्ञान की इसकी अवधारणा में मिलती है। [10]ए. बी. *डेविडसन, द थियोलॉजी ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* सम्पा. एस. डी. एफ. सालमंड (न्यू यॉर्क: चार्ल्स स्क्रिबनर'स संस, 1924), 493–95; और गरहर्ड वॉन रैड, *ओल्ड टैस्टामैंट थियोलॉजी,* अनु. डी. एम. जी. स्टाल्कर (न्यू यॉर्क: हार्पर ऐंड रो पब्लिशर्स, 1962), 1:416–18.

[11]ढोर्म, cxcvi-ccvi. [12]वहीं, cciii। [13]वहीं, 603. [14]वहीं। [15]वहीं, ccvi. [16]टेरिन, ''याहवेह स्पीचस,'' 449. [17]आर. ए. एफ. मैकेंज़ी, ''द परपज़ ऑफ़ द याहवेह स्पीच इन द बुक ऑफ़ अय्यूब,'' *बिब्लिका* 40 (1959) : 437. [18]जेम्स मुलबेनबर्ग, ''द स्पीच ऑफ़ थियोफेनी,'' *हार्वर्ड डिविनिटी बुलेटिन* 28 (जनवरी 1964): 43. [19]ढोर्म, lxxxvii. [20]वहीं; ऐंड बर्रोस, 118.

[21]टेरिन, ''याहवेह स्पीचस,'' 499. [22]रॉबर्ट एच. पिफ़र, *इंट्रोडक्शन टू द ओल्ड टैस्टामैंट,* 2रा संस्क. (न्यू यॉर्क: हार्पर ऐंड ब्रदर्स पब्लिशर्स, 1941), 674. [23]रोअले, *फ्रॉम मोज़स टू कुमरान,* 351–52 में भाषणों की प्रामाणिकता और प्रकृति से सम्बन्धित अलग-अलग विचार रखने वाले विद्वानों की शानदार सूची के साथ यहोवा के भाषणों की चर्चा देखें। [24]सेमुएल रोलस ड्राइवर ऐंड जॉर्ज बुचनन ग्रे, *ए क्रिटिकल ऐंड एक्सजेटिकल कॉमैंट्री ऑन द बुक्स ऑफ़ अय्यूब,* द इंटरनेशनल क्रिटिकल कॉमैंट्री (एडिनबर्ग: टी. ऐंड टी. क्लार्क, 1921), 351–52. [25]टेरन, ''याहवेह स्पीचस,'' 502. [26]ड्राइवर ऐंड ग्रेअ, lviii–lxiii. [27]बॅरोज़, 130. [28]वहीं। [29]टेरियन, ''याहवेह स्पीचस,'' 502. [30]वहीं, 504.

[31]ढोर्म, xciv. [32]वहीं, xcv. [33]ढोर्म ने ऐसे मिस्री रूपक को कमल का पौधा (40:21, 22), पेपरिस या कछार का पौधा (8:11), सरकंडे की नावें (9:26) और शायद ''नालों'' के लिए शब्द (28:10) लिखा। (वहीं।) [34]इससे मेल खाते उदाहरणों में शामिल हैं: ईश्वरीय नामों का इस्तेमाल, नक्षत्रों के नाम और महिमा व्यक्त करने वाले शब्द। (वहीं, xcvi.) [35]वहीं।

अध्ययन 4

जलगज और लिव्यातान

''जलगज'' और ''लिव्यातान'' के विवरण के अय्यूब 40:15–41:34 में मिलते हैं। अपने दूसरे भाषण में यहोवा ने अय्यूब को अपना ''न्याय व्यर्थ'' ठहराने (40:8) या ऐसी सामर्थ और महिमा दिखाने वाली योग्यता पर सवाल किया जो संसार के सृजित जीवों पर शासन करने के लिए आवश्यक है (40:9–14)। इसके बाद उसने दो भयंकर जीवों का परिचय दिया जो अय्यूब के नियन्त्रणों से बाहर हैं: जलगज और लिव्यातान। ये शब्द मूल इब्रानी शब्दों (*b^{e}hemoth, बेहमोथ,* तथा *liwyathan, लिव्यातान*) से लिए गए हैं। दोनों शब्द कई अनुवादों में मिलते हैं (KJV; NKJV; ASV; NASB; RSV; NRSV; NIV; NAB; NJPSV; NJB; NCV)। इनमें से कई संस्करणों में टिप्पणियों में ''दरियाई घोड़ा'' और ''मगरमच्छ'' के अनुवाद का सुझाव दिया गया है। NLT में इन शब्दों को बदला गया है।

जलगज

''जलगज'' के लिए इब्रानी शब्द बेहेमोथ *b^{e}hemah* (*बेहेमाह*) का बहुवचन रूप है जिसकी परिभाषा ''जंतु, जानवर, ढोर'' के रूप में की गई है।[1] पुराने नियम में ''जंतु'' के लिए यह सबसे सामान्य इब्रानी शब्द है। पुराने नियम में बहुवचन रूप नौ बार मिलता है और एक अपवाद अय्यूब 40:15 के साथ इसका अनुवाद ''जंतुओं'' किया गया है। इस वचन में बहुवचन रूप का इस्तेमाल परमेश्वर के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले बहुवचन रूप *'Elohim* (*एलोहिम*) और सामान्य रूप में ''महिमा का बहुवचन'' की तरह गहरा प्रभाव देने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

एस. बोचर्ट (1663) के समय से ही *बेहेमोथ* का अनुवाद ''दरियाई घोड़ा'' हुआ है जो उसके द्वारा लिए गए ''बेहेमोथ''[2] के जैसा गने वाले मिस्री शब्द का अनुवाद है। परन्तु और कई पहचानों का सुझाव दिया गया है: ''काल्पनिक पशु, पूर्व ऐतिहासिक जंतु जो अब विलुप्त हो चुका है, हाथी, [और] गैंडा।''[3] वेयन जेक्सन ने सुझाव दिया है कि ''डायनासोर का कोई रूप, जैसे ब्रांटोसोरस, व्यावहारीय सम्भावना हो सकती है।''[4] इस विकल्प के समर्थन के लिए उसने सात तर्क दिए।[5]

हम हठधर्मी तो नहीं हो सकते पर मैं नहीं मानता कि वचन में डायनासोर का विवरण दिया गया है। पहली बात तो यह कि मैं किसी भी प्रकार के प्राचीन लेख को नहीं जानता जो बाइबल के काल के दौरान डायनासोर की बात बताता हो। दूसरा, अय्यूब की पुस्तक के परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त लेखक ने अपनी बात को समझाने के लिए कि यह शक्तिशाली पशु मनुष्य के वश में नहीं हो सकता, ''छंदबद्ध अतिश्योक्ति'' का इस्तेमाल किया।

इसके अलावा मैं एलमर ए. मार्टन्स के विचार से सहमत नहीं हूं:

> *B^{e}hēmôt* को सबसे बढ़िया भूमि पर रहने वाले बड़े जानवर के रूप में माना जा सकता है जिसकी आदतें पता हैं और उनका वर्णन किया गया है, परन्तु जैसा कि कविता का

प्रचलन है, वह किसी अनोखे काल्पनिक जंतु के रूप में किसी और अर्थ को दर्शाता हो सकता है। इसलिए यह सम्भव है कि अय्यूब की पुस्तक में काल्पनिक जंतु होने का संकेत है, परन्तु ऐसे संकेत का अर्थ इन कल्पनाओं के वास्तविक होने को सही नहीं बनाता।[6]

मुझे ऐसा लगता है कि स्वाभाविक व्याख्या वचन के साथ मेल खाती है। निश्चय ही ''छंदबद्ध अतिश्योक्ति'' का इस्तेमाल किया गया है। इस कारण, हो सकता है कि बेहमोथ के कुछ पहलू दरियाई घोड़े के साथ पूरे पूरे मेल न खाते हों, परन्तु सामान्य विवरण को इस्राएल के पाठक भयभीत करने वाले जीव के रूप में समझते होंगे।

लिव्यातान

''लिव्यातान'' शब्द पुराने नियम में पांच आयतों में छह बार मिलता है। इन अलग-अलग संदर्भों में कोहलर ऐंड बामगार्टनर लैक्सिकन में इन अनुवादों का सुझाव दिया गया है: ''ड्रेगन'' (3:8), ''मगरमच्छ'' (41:1), और ''व्हेल'' (भजन संहिता 104:26)। अधिकतर आधुनिक अनुवादों में इब्रानी शब्द को केवल ''लिव्यातान'' के रूप में लिप्यंत्रित किया गया है।

फिर से, अय्यूब 41:1-34 में वर्णित जंतु की पहचान के प्रयास के लिए काफी चर्चा और कुछ अनुमान लगाया जाता है। एच. एच. रोअले ने कहा कि ''बिना किसी शक के लिव्यातान एक काल्पनिक जंतु है।''[7] परन्तु रॉबर्ट गोर्डिस ने तर्क दिया है, ''दरियाई घोड़ा और मगरमच्छ वास्तविक जंतु हैं और स्तुति के इन जय गानों में उनका शामिल किया जाना किसी भी तरह से संयोग नहीं है।''[8] उसने इस धारणा को भी नकारा की दूसरा भाषण पहले से कम और उसे बाद में जोड़े गए के रूप में नकार देना चाहिए। उसने कहा, ''यह बहुत ही आत्मफर्क दृष्टिकोण है जिसे मैं नहीं मानता।''[9]

यह सच है कि अलग-अलग जानवरों, ''लिव्यातान'' शब्द के इस्तेमाल के द्वारा पुराने नियम के अलग-अलग संदर्भों का विवरण दिया जा सकता है पर मैं मानता हूं कि अय्यूब 41 वाला विवरण सराहनीय ढंग से मगरमच्छ के साथ मेल खाता है।

सारांश

मैं उतनी दूर तक नहीं जाऊंगा जितनी दूर तक रे सी. स्टेडमैन चला गया जिसने लिखा, ''ज्यादातर इन जानवरों की पहचान पर बहस करना समय बर्बाद करना ही है।''[10] परन्तु मैं याद दिलाऊंगा कि पवित्र शास्त्र में जानवरों के बहुत से उदाहरण हैं जो बेहद सांकेतिक हैं। चाहे उनके स्वाभाविक क्षेत्र में रहने की बात की गई है पर वे उस क्षेत्र से आगे निकल जाते हैं। हो सकता है कि हमें यह कभी भी पक्का पता न चल पाए कि बेहमोथ और लिव्यातान कैसे थे, पर हमें यहोवा द्वारा अय्यूब को दिए जाने वाले संदेश के महत्व को नहीं भूलना चाहिए।

टिप्पणियां

[1]फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राइवर, ऐंड चार्ल्स ए. ब्रिगस, *ए हिब्रू ऐंड इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट* (ऑक्सफोर्ड: क्लेरेंडन प्रैस, 1968), 96; और लुडविग कोहलर ऐंड वाल्टर बामगार्टनर, *द हिब्रू ऐंड*

अरेमिक लेक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट, स्टडी एडिशन, अनु. व सम्पा. एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 1:111–12. [2]*थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* सम्पा. जी. जोहान्नस बोट्टरवेक ऐंड हेल्मर रिंग्रेन, अनु. जॉन टी. विलिस (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1975), 2:17 में जी. जोहान्स बुट्टरवेक, "*bᵉhēmāh; bᵉhēmôth.*" [3]जेम्स बर्टन ऐंड थेलमा बी. कॉफ़मैन, द *बुक ऑफ़ अय्यूब* (अबिलेन, टेक्सस: एसीयू प्रैस, 1993), 14. [4]वेयन जैक्सन, द *बुक ऑफ़ अय्यूब* (एबिलेन, टेक्सस: क्वालिटी पब्लिकेशंस, 1983), 86. [5]वहीं। [6]*थियोलॉजिकल वर्डबुक ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* सम्पा. आर. लेयर्ड हैरिस, ग्लीसन एल. आर्चर, जूनियर, और ब्रूस के. वाल्टके (शिकागो: मूडी प्रैस, 1980), 1:93 में लुइस ए. मार्टिन, "(*bhm*)।" [7]एच. एच. रोअले, *अय्यूब,* द सेंचुरी बाइबल, न्यू सीरीज़ (ग्रीनवुड, दक्षिण कैरोलिना: द अटिक प्रैस, Inc., 1970), 332. [8]रॉबर्ट गोर्डिस, द *बुक ऑफ़ गॉड ऐंड मैन: ए स्टडी ऑफ़ अय्यूब* (शिकागो: द यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1965), 120. [9]वहीं, 122. [10]रे सी. स्टेडमैन, *एक्सपोज़िटरी स्टडीज़ इन अय्यूब: बिहाइंड सफरिंग* (वाको, टेक्सस: वर्ड बुक्स, 1981), 176.